बेरोज़गारी पर मनोरोग का लेबल न लगाएं

लंदन के जॉब सेंटरों की खिड़कियों पर एक बैनर लटका है जिस पर लिखा है कि 'काम पर लौटो' उपचार अब कोई उपचार नहीं रहा। यह विरोध प्रदर्शन है सरकार की उस नीति के खिलाफ जिसके तहत बेरोज़गारी भत्ते का दावा करने वाले लोगों को काम के साथ मनोवैज्ञानिक उपचार भी दिया जाएगा। इनमें 350 मनोवैज्ञानिक उपचार सेंटर शामिल हैं जो बेरोज़गारों पर ऑनलाइन उपचार थोप रहे हैं।

बेरोज़गारी को एक ऐसे समय पर मनोविकार के तौर पर परिभाषित किया गया है जब यूके सरकार लोक कल्याण कार्यक्रमों में 12 अरब डॉलर की कटौती करने जा रही है। यूके के अलावा ऑस्ट्रेलिया और यूएस जैसे अन्य अमीर देशों में आजकल लोक कल्याण योजनाओं के लाभ के दावेदारों को व्यक्तित्व, आस्थाओं और भावनाओं को बदलने के लिए हस्तक्षेपों से गुज़रना होता है।

बेरोज़गारों को मुफ्त में ऐसा उपचार उपलब्ध करवाना तो समझ में आता है, मगर क्या इसे एक शर्त बनाना उचित है? दावेदारों को यह साबित करना होता है कि उनमें नौकरी के लिए ज़रूरी गुणधर्म - आत्मविश्वास और उत्साह - मौजूद हैं।

कार्य और पेंशन विभाग ने इस बात से इन्कार किया है कि इस उपचार से इन्कार करने वाले व्यक्ति को लाभों से वंचित किया जाएगा। वैसे कंज़र्वेटिव पार्टी के घोषणापत्र में यह चेतावनी दी गई थी कि जिन लोगों को इस उपचार से लाभ मिल सकता है वे चिकित्सा मदद लें ताकि वे काम पर लौट सकें। यदि वे इस उपचार को लेने के लिए मना करते हैं तो हम उनको मिलने वाले लाभों पर पुनर्विचार करेंगे।

इन उम्मीदवारों को जबरन विश्वास बहाली प्रोग्राम में शामिल कर उनसे सामूहिक गतिविधियां (जैसे टीम में पेपरक्लिप टावर बनाना) करवाईं जाती हैं। और उनकी क्षमता नापने के लिए अर्थहीन और अनैतिक मनोवैज्ञानिक टेस्ट किए जाते हैं। नौकरी की तलाश में बैठे लोगों को अनचाहे प्रेरक संदेश ईमेल किए जाते हैं। कुशलताओं में खामी पाए जाने पर व्यक्ति को तीन साल के लिए लाभ से वंचित किया जाता है या अवैतनिक काम पर भेजा जाता है।

इस तरह की गतिविधि नौकरी या किसी विशेष नौकरी-सम्बंधी कौशल या योग्यता पर केन्द्रित नहीं है। जैसे इसके लिए चलाए जा रहे कुछ कोर्सेस में रोज़गार-काबिलियत और नौकरी की तत्परता जैसे गुण विकसित किए जाएंगे।

नौकरी पाने और रखने के लिए कुछ संकीर्ण विशेषताएं बताई गई हैं - जैसे आत्मविश्वास, आशावादिता, प्रेरणा, आकांक्षा और लचीलापन। और काम के प्रति मनोवैज्ञानिक प्रतिरोध और नाकारापन की संस्कृति जैसी निरर्थक धारणाओं का इस्तेमाल लोगों पर दबाव बनाने और दंडित करने के लिए किया जा रहा है।

इस तरह की काम की नीतियां बनाकर उसे मनोवैज्ञानिक उपचार से जोड़ना अनैतिक है और यह गंभीर चिंता का विषय है। ***(स्रोत फीचर्स)***